



## (क) अनौपचारिकम् पत्रम्

## 1. योगदिवसे आयोज्यमाने कार्यक्रमे अनुजस्य सहभागित्वं वर्णयत् पत्रम्।

जयपुरम् 17.11.2017

प्रिय अनुज, सस्नेहं नमो नम:।

कुशली, कुशलं कामये। इदं विज्ञाय मम चेतः अतीव प्रसन्नताम् अनुभवित यद् भवान् योगदिवसम् उपलक्ष्य राजधान्याम् आयोजिते विशेषकार्यक्रमे भारत प्रधानमन्त्रिणा सह योगासनानि करिष्यित। योगाः स्वास्थ्यस्य रक्षायाः सरलतमाः उपायाः सन्ति। सम्पूर्णविश्वं भारतीयस्य योगज्ञानस्य शिक्षणाय उत्सुकं दृश्यते। संयुक्तराष्ट्रसंघः (U.N.O) जूनमासस्य एकविंशित-तारिकां 'योगदिवसः' इति रूपेण घोषितवान्।

अनुज! योगासनानि रक्तचापं, हृदयरोगम्, अतिस्थूलतां, मधुमेहं च निवारयति। त्वमिप प्रतिदिनम् अभ्यासं करोषि, अत: मन्ये तव स्वास्थ्यं सुदृढम् अस्ति एव। एवमेव उत्तरोत्तरम् उन्नतिं कुरु इति मे शुभकामना।

तव अग्रज:

रामकरण:

सी/104 वसन्तकुञ्जमः

जयपुरम्

## अभ्यास:—योगदिवसे आयोज्यमाने कार्यक्रमे भगिन्याः सहभागित्वं वर्णयन्तः एकं पत्रं लिखत।

| *************************************** |
|---|
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
| <br>•••••                               |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
| <br>                                    |
|   |
|   |
| <br>                                    |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
| <br>•••••                               |
|   |
|   |
| <br>                                    |
|   |
|   |
| <br>                                    |
|   |
|   |
| <br>                                    |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
| <br>••••••                              |
|   |
|   |
| <br>                                    |
|   |
|   |
| <br>                                    |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |
|   |



## (ख) औपचारिकम् पत्रम्

#### 1. अवकाशार्थं प्रार्थना-पत्रम्।

सेवायाम् श्रीमन्तः प्राचार्याः केन्द्रीयविद्यालयः, जयपुरम् राजस्थानम् विषय:- दिनद्वयस्य अवकाशार्थं प्रार्थना-पत्रम्। महोदयाः सविनयं निवेदयामि यदहं भवतः विद्य

सविनयं निवेदयामि यदहं भवत: विद्यालयस्य माध्यमिक-कक्षाया: छात्र: अस्मि। ह्यः विद्यालयात् गृहं गच्छन् अहं ज्वरग्रस्त: अभवम्। यदाहं चिकित्सकं प्रति गत: तदा चिकित्सकेन दिनद्वयस्य विश्रामाय परामर्श: प्रदत्त:।

अतः अहं विद्यालयम् आगन्तुम् असमर्थः अस्मि। कृपया मम प्रार्थनां स्वीकृत्य दिनद्वयस्य अवकाशं प्रदाय माम् अनुगृह्णन्तु भवन्तः इति।

> भवताम् आज्ञाकारी छात्र: राजीव: नवमी 'ब' क्रमाङ्क:-35

दिनाङ्क:-28.11.2017

## क अवकाशार्थं प्राचार्यां प्रति प्रार्थनापत्रम् लिखत।

| संवायाम्                                   |
|--|
| प्राचार्या                                 |
| केन्द्रीयविद्यालय: रोहिणी,                 |
| दिल्ली                                     |
| विषय: दिनद्वस्य अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रम् |
| महोदये                                     |
|  |
|  |
|  |
|  |

| अभ्यासवान् भव |  |
|---------------|--|
|               |  |
|               |  |
|               |  |
|               |  |
|               |  |
|               |  |
|               |  |
|               |  |
|               |  |

## 2. भगिन्या: विवाहे गन्तुं प्रार्थना-पत्रम्।

सेवायाम्,

श्रीमन्त: प्राचार्या:

प्रतिभा-विकास-विद्यालय:

वसन्तक्ञ्जः

नवदिल्ली

विषय:- भगिन्या: विवाहे गृहं गन्तुम् अवकाशार्थं प्रार्थना।

महोदया:

सविनयं निवेदयामि यदहं नवम कक्षाया: छात्र: अस्मि। आगामिन: मासस्य द्वितीयायां तिथौ मम ज्येष्ठभिगन्या: विवाह: सुनिश्चित: अस्ति। वरयात्रा गाजियाबादत: आगमिष्यति। भिगन्या: शुभविवाहस्य अवसरे मम उपस्थिति: अनिवार्या अस्ति। अनुज: अस्मि इति कारणात् बहुकार्याणि मया करणीयानि।

कृपया मम स्थितिं विचार्य सप्ताहस्यैकस्य अवकाशं प्रदाय माम् अनुगृह्णन्तु। अध्ययनस्य अवशिष्टं कार्यम् अहम् अवकाशं समाप्य शीघ्रमेव पूरियष्यामि।

> भवताम् आज्ञाकारी शिष्य:, जयदेव: नवमी-'स' क्रमाङ्क:-31

दिनाङ्क:-28.11.2018

on our



| क भ्रातुः विवाहे गमनाय प्रार्थना-पत्रम् लिखत।                                      |
|--|
| सेवायाम्   |
| प्राचार्या,  |
| केन्द्रीय-विद्यालय: चमोली,   |
| महोदये   |
|  |
|  |
|  |
|  |
|  |
|  |
|  |
|  |
|  |
|  |
|  |
|  |
|  |
|  |
|  |
| 3. भवान् अविनाशः। शैक्षिकभ्रमणाय अनुमतिं, व्ययार्थं धनं च प्रार्थयितुं पितरं प्रति |
| मञ्जूषायाः सहायतया पत्रं लिखत्।  |
| ન-ગૂરાવા. સફાવાવા વર્ત્ર ભાવતા   |
| स्वाध्याये, भवान्, प्रथमसत्रीया, शैक्षिकभ्रमणस्य, अनुमति:, गन्तुम्,                |
| पञ्चशतरूप्यकाणि, प्रेषयन्तु, शीघ्रातिशीघ्रं, प्रतीक्षायाम्                         |
| छात्रावासत:  |
| दिनाङ्कः   |
|  |
| पूज्यपितृचरणाः,  |
| प्रणतीनां शतम्।  |
| अत्र अहं कुशल: 1 व्यापृत: अस्मि। आशासे 2   |
| अपि मात्रा सह आनन्देन निवसति। मम उ   |
| सम्पन्ना। परीक्षानन्तरं शिक्षकै: सह छात्राणां 4योजना अस्ति। यदि                    |

| भवत: 5                     | ·········स्यात् तर्हि अहमपि तै: सह 6······     |
|----------------------------|--|
| इच्छामि। सर्वै: एव गन्तुका | ामै: 7देयानि सन्ति। भवत: अनुमतिः               |
| _                          | णि शुल्काय, पञ्चशतरूप्यकाणि च मार्गव्ययार्थं ८ |
| ·····भवन्त:I               | •  |
| कृपया 9                    | स्वमन्तव्यं प्रकटयन् पत्रं लिखतु।              |
| भवतः अनुमत्याः 10          | भवतः पुत्रः                                    |
|                            | अविनाश∙  |

#### 4. पर्वतीयसुषमाया: वर्णनं कुर्वन् स्विमत्रं निमतं प्रति सुमेशस्य पत्रम्।

प्रिय मित्र नमित, सप्रेम नमो नमः।

अत्र कुशलं, तत्र अस्तु। दिसम्बरमासे अहं परिवारेण सह कश्मीरप्रदेशम् अगच्छम्। कश्मीरप्रदेशस्य सौन्दर्यं तु दर्शकान् आकर्षयित। विविधैः फलैः युक्ताः वृक्षाः प्रकृतेः सौन्दर्यं वर्धयन्ति एव। सर्वत्र एव हरितिमा आसीत्। यत्र कुत्रापि दृष्टिः गच्छिति तत्र प्रकृतेः सुषमा एव दृश्यते स्म। कश्मीर-प्रदेशस्य डलसरः तु सर्वेषाम् आकर्षणस्य केन्द्रम् अस्ति। यदा अत्र हिमपातः भवित, तदा तस्य वर्णनं कर्तुं न कोऽपि समर्थः अस्ति। कश्मीरप्रदेशः पृथिव्याः स्वर्गः एव। यदा भवान् अत्र आगमिष्यित तदा मम कथनस्य सत्यतां ज्ञास्यित। शोषं सर्वं कुशलम्।

मातापित्रो: चरणयो: प्रणामा:।

भवत: मित्रम्

सुमेश:

दिनाङ्क:-28.11.2018

#### 5. दण्डशुल्कक्षमापनार्थं प्रधानाचार्यां प्रति पत्रम्।

|          | परीक्षाभवनत | : |
|----------|-------------|---|
| दिनाङ्क: |             |   |

आदरणीया प्रधानाचार्या, राजकीय: प्रतिभाविद्यालय: दिल्ली-1100039

महोदये!

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् अहं भवत्याः विद्यालयस्य नवमकक्षायाः छात्रः अस्मि। ह्यः अहं विद्यालयम् विलम्बात् आगच्छम्। अतः अहं कक्षाध्यापिकया पञ्चाशद्रूप्यकैः दण्डितः।

on ou



|    | गृहस्य आर्थिकस्थितिः सुदृढा नास्ति । अतः अहं शुल्कं दातुम् असमर्थः। कृपया मम<br>कं क्षमित्वा अनुगृह्णन्तु। |
|----|--|
| 9  | धन्यवादः   |
|    | भवत: शिष्य:  |
|    | अमित:  |
|    |  |
| क  | दण्डशुल्कक्षमापनार्थं प्रधानाचार्यं प्रति प्रार्थना-पत्रम् लिखत।   |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    |  |
|    | <u></u>  |
|    |  |
| 6. | 'ई-मनी' इत्यस्य महत्त्वं वर्णयन्त: पितरं प्रति पत्रं लिखत।   |
| -  | नवदिल्लीत:   |
|    | दिनाङ्क: 17.01.2018  |

सम्मान्याः पितृचरणाः,

सादरं प्रणमामि।

भवतः पत्रम् प्राप्तम्। पत्रं पठित्वा अतीव प्रसन्नताम् अनुभवामि। जनन्या सह भवताम् अत्र आगमनम् अचिरेण भविष्यति इति ज्ञात्वा विशेष-प्रसन्नता जाता। अद्यैव अहम् ई.मनी इति माध्यमेन मार्गव्ययं प्रेषयामि। सद्यः एव नूतनतया भारतसर्वकारेण प्रवर्तितः एषः ई.माध्यमः अतीव सरल:। भवान् स्व-कोषागारात् प्राप्तम् एटीएम कार्ड इति गृहीत्वा रेलस्थानकं गच्छतु। तत्र एकं कूटसंकेतं प्रदाय भवान् धनं प्राप्तुं शक्नोति।

ई. मनी माध्यमस्य अन्येऽपि लाभा: सन्ति। यथा-चौरस्य भयं न भवति, यत्र-कुत्रापि प्रेषणं सरलं भवति, सर्वकारस्य आदेशेन सर्वे विभागा: एतत् धनं स्वीकुर्वन्ति।

कृपया चिटिकां निर्माय आगमनतिथिं ज्ञापयतु। अहम् उत्सुकतया भवतः पत्रस्य प्रतीक्षां करोमि।

मातुः चरणयोः मे प्रणामाः निवेदनीयाः।

भवतः सुपुत्रः

सत्यनारायण भारद्वाजः

| <u> </u> | 'ई-मनी' इत्यस्य महत्त्वं वर्णयन्तः मातुलं प्रति पत्रं लिखत। |
|----------|---|
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |
|          |   |



# 7. अतिविश्वासात् हानि: इत्यधिकृत्य मित्राय मञ्जूषाया: सहायतया पत्रं लिखत।

अस्तु, पृष्टम्, कारणम्, परीक्षापरिणामः, ईदृशः, मया, अतिविश्वासः, अन्यः, सर्वम्

| परीक्षाभवनत:<br>दिनाङ्क:  |
|---|
| प्रिय मित्र!  |
| नमो नम:   |
| अत्र कुशलं तत्र 1। भवता 2   |
| यत् प्रथमसत्रपरीक्षायां मम परीक्षापरिणाम: कीदृश: अस्ति ?                            |
| प्रथमसत्रपरीक्षायां मम 3 आशानुकूलः न अस्ति। अस्य                                    |
| 4 अपि मया ज्ञातम्, मम स्वोपरि 5 एव आसीत् यत् अहं                                    |
| तु सर्वम् एव जानामि। कदाचित् 6 स्वोपरि विश्वास: मानवाय विनाशकारी                    |
| भवति। अस्य दुष्परिणामः ७अस्य पात्रं   |
| न भवेत् इति कृत्वा कथयामि। कदापि स्वोपरि अतिविश्वास: न करणीय:। शेषं ९               |
| कुशलम्। सर्वेभ्यः मम प्रणामाः।  |
| भवतः मित्रम्  |
| 8. भवान् सुमित:। मञ्जूषायां दत्तै: पदै: सह योगस्य महत्त्वं वर्णयन् स्वमित्रम् अमितं |
| प्रति पत्रं लिखतु।  |
| योगस्य, आगताः, प्रभावः, कार्यक्रमे, सिध्यति, प्रेरितान्, जनाः, तैः                  |
|   |
| परीक्षाभवनत:  |
| दिनाङ्क:  |
| प्रिय मित्र <b>अमित!</b>  |
| सप्रेम नमो नम:।   |
| अत्र कुशलं तत्र अस्तु। मम पिता योगदिवसे 1प्रचारार्थं स्वक्षेत्रे आयोजनं             |
| कृतवान्। तस्मिन् २योगविद्यायां कुशला: अनेके 3आगत्य                                  |
| स्वविचारान् प्रकटितवन्त:। एवं ते जनान् योगस्य जीवने स्वीकारार्थं ४अपि               |

| अकुर्वन्। योगेन किं किं 5किं किं च प्राप्य                      | ते इति अपि 6                    |
|---|---------------------------------|
| स्पष्टीकृतम्। तेषाम् उद्बोधकानां विचाराणाम् ईदृश: 7             | जात: यत् ये अपि जना:            |
| तत्र 8 ——ने योगप्रक्रियां जीवने धारयितुं प्रति                  | ज्ञाम् अकुर्वन्। यदि भवान् अपि  |
| अत्र स्यात् तदा स्वयं पश्येत्। अस्तु! शेषं सर्वं कुशलम्।        |                                 |
|   | भवत: मित्रम्                    |
|   | सुमित:                          |
| 9. भवान् प्रथमसत्रपरीक्षायाम् उत्तमाङ्कान् प्राप्तवान् इति      | वर्णयन् मित्रं प्रति मञ्जूषाया: |
| सहायतया पत्रं लिखतु।  |                                 |
| समयसारणीम्, सर्वम्, अस्तु, अङ्गाः, अनुपालनम्,<br>परीक्षापरिणामः | पृष्टम्, कारणम्, कारणात्,       |
|   | परीक्षाभवनत:                    |
|   | तिथि:                           |
| प्रिय मित्र,  | 1019                            |
| नमोनमः  |                                 |
| अत्र कुशलं तत्र 1 भवता 2  | यत प्रथमसत्रपरीक्षायां मम       |
| परीक्षापरिणाम: कीदृश: अस्ति? प्रथमसत्रपरीक्षायां मम 3           |                                 |
| अस्य ४एतत् अस्ति यत् मया नियमानाम् अ                            | <b>3</b> - <b>1</b>             |
| खेलनम्, पठनस्य समये पठनम् कृतम्। अस्मात् ५                      | मया परीक्षायां शोभना: 6         |
| प्राप्ता:। सत्यम् एव एतत् यदि समयस्य 7 <sup></sup>              |                                 |
| परिणामोऽपि शोभन: भवति। भवान् अपि एवं 8                          |                                 |
| सर्वेभ्य: मम प्रणामा:।  | •                               |
|   | भवत: मित्रम्                    |
| 10. अतिवृष्टे: कारणात् विषमं जीवनं यापयन्तं स्विमत्रं           | प्रति पत्रं लिखत।               |
|   | दिल्लीनगरत:                     |
|   | दिनाङ्कः                        |
| ि प्रिय मित्र सुमित!  |                                 |
| नमो नम:।  |                                 |
|   |                                 |
|   |                                 |

2022-23



अत्र कुशलं, भवतः कुशलं कामये। समाचारपत्राद् ज्ञातं यत् चेन्नईनगरस्य जीवनम् अतिवृष्टिकारणात् कठिनं जातमस्ति। सर्वत्र मार्गेषु वीथिषु च जलप्लावनं दृश्यते। यातायातम् अपि प्रभावितं जातमस्ति। भवान् अस्मिन् विषमे समये कथं जीवनं यापयित इति सूचयतु। अहम् भवतः चेन्नईनगरस्य अन्येषां जनानां च जीवनं पूर्ववत् सुकरं स्यात् इति भगवन्तं प्रार्थये।

भवतः सर्वविधकुशलतायाः कामनया सह...

क

भवत: मित्रम् सिद्धार्थ:

| अतिवृष्टे: कारणात् विषमजीवनं यापयन्तीं स्वभगिनीं प्रति पत्रं लिखत। |  |
|--|--|
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |
|  |  |